P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May (Part-1)- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

ध्वनि परिवर्तन की दृष्टि से कुमाउनी शब्दों का संक्षिप्त अध्ययन

राजेश प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, (संविदा)
राजकीय महाविद्यालय,
दुगनाकुरी, बागेश्वर,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

यह शोध भारत देश के उत्तराखण्ड राज्य में बोली जाने वाली कुमाउनी भाषा में प्रयुक्त शब्दों का ध्वनिपरक अध्ययन है। भाषा विचार–विनिमय का साधन होती है, जिससे वहाँ की संस्कृति, जनमानस का विकास संभव होता है। भाषा के विषय में चिंतन करने वाला हर तीसरा व्यक्ति चिंतित है कि लोकभाषाओं के अस्तित्व में खतरा मंडरा रहा, उसे संजोने की आवश्यकता है। कुमाउनी भाषा में शब्द भण्डार प्राचीन काल से विभिन्न कारणों से दूसरी भाषा के शब्द समाहित हैं जिससे कुमाउनी भाषा समृद्ध है। जिनका ध्वनि की दृष्टि से ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि परिवर्तन की दिशाऐं पर अध्ययन किया है। ध्वनि भाषा को जन्म देती है अर्थात् ध्वनि से स्वर, व्यंजन वर्ण निर्मित होते है जो भाषा के विकास और उद्‌भव को प्रस्तुत करते हैं। कुमाउनी भाषा की शब्द संपदा विशाल एवं कतिपय हिन्दी से अत्यन्त विशेषताओं से युक्त है। यह शोध कुमाउनी भाषा ध्वनि विज्ञान पर आधारित है जो हिन्दी के सदृश है।

मुख्य शब्द : ध्वनि, आगम, लोप, महाप्राणीकरण, अल्प्राणीकरण, विषमीकरण, वर्ण विपर्यय, घोषीकरण, अघोषीकरण।

प्रस्तावना

मानव को सृष्टि का सबसे श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। यह समाज की प्राण शक्ति का परिचायक भी है। इसके द्वारा की गई उन्नति के मूल में उसकी अपनी भाषा, संस्कृति और सभ्यता का विशेष योगदान है। भाषा मानव जीवन में विचारों का आदान–प्रदान करने का साधन है। किसी भी साहित्य अथवा विचारों को भाषा व्यक्त करने का संकेत है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भावनाओं, इच्छाओं को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है और जनमानस उनसे परिचित होता है।

मानव की आज तक की सृजनात्मक उपलब्धियों में भाषा को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है ज्ञान के आलोक में विचरण करता हुआ मानव अपने भविष्य के प्रति जितना उत्सुक है, अपने अतीत के प्रति उतना ही जिज्ञासु भी है यही कारण है कि आज कुमाऊँ ही नहीं पूरा भारत अपनी अस्मिता के बहुआयामी परिचय हेतु प्रयासरत है। इस प्रक्रिया में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि को जानने का सहज माध्यम भाषा होती है। भाषा मानव जीवन का मेरूदण्ड होती है।

कुमाउनी भाषा हिन्दी भाषा से संयोग रखती है। हिन्दी भारत की केन्द्रीय या प्रमुख आर्यभाषा है जो मुख्यतः शौरसैनी अपभ्रंश से उद्‌भूत हुई है। प्राचीन होने के कारण विशेषकर भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत को ही माना गया है। सबसे प्राचीन भाषा वैदिक संस्कृत है जिनका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों, शिलालेखों, ताम्रपत्रों आदि में मिलता है। कुमाउनी भाषा का विकास क्रम संस्कृत पाली प्राकृत अपभ्रंश हिन्दी कुमाउनी के रूप में विभिन्न कालों में दिखाई पड़ता है। कुमाउनी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है। इस भाषा के लिपि चिह्न हिन्दी के समान है लेकिन नागरी लिपि में जितनी आसानी से हिन्दी की ध्वनियों को लिखा जा सकता है उतनी आसानी एवं शुद्धता के साथ कुमाउनी भाषा की ध्वनियों को लिख पाना काफी मुश्किल है।

कुमाउनी भाषा प्रदेश की अनेक बोलियों का समूह है यद्यपि भाषा की दृष्टि से संपूर्ण कुमाऊँ प्रदेश हिन्दी भाषी क्षेत्र के अंतर्गत आता है। कुमाउनी भाषा का शब्द भण्डार समृद्ध है। भाषा के इतिहास से पता चलता है कि अन्य भारतीय आर्य भाषाओं की तरह कुमाउनी भी आर्यभाषाओं से विकसित है। प्राचीन काल से वर्तमान स्वरूप में आने तक भारत की आधुनिक आर्यभाषाओं को एक

लम्बी यात्रा से गुजरना पड़ा है। कुमाउनी भाषा में इस क्षेत्र की रीतिरिवाज, परम्पराऐं, लोकविश्वास, पर्व त्यौहार यहाँ की संस्कृति आदि ने शब्द भण्डार को विकसित किया है साथ ही कुमाउनी को अब बोली के स्थान पर भाषा माना जाने लगा है क्योंकि कुमाउनी की विभिन्न उपभाषाओं एवं विविधताओं को स्पष्ट किया जा रहा है। कुमाउनी भाषा में वर्तमान समय में अनेक शोध कार्य, अनेक किताबें लिखी जा रही है, बोली का क्षेत्र विस्तृत हो रहा है। आज कुमाउनी भाषा को प्राप्त स्वरूप में भी संस्कृत का उपकार है क्योंकि विकसित होती कुमाउनी भाषा का उज्ज्वल भविष्य दिखाई देता है।

अध्ययन का उद्देश्य

कुमाउनी भाषा का साहित्य जो वास्तविक रूप में कुमाउनी संस्कृति की धरोहर है वह जनमानस के समक्ष पहुँचना चाहिए। भाषा एक मानव के आंतरिक विचारों को दूसरे तक पहुंचाती है यह स्वीकार किया जा चुका है। निश्चित रूप से भाषा के हर पहलू पर कार्य करना चाहिए। इसी को सोचकर कुमाउनी शब्दों का ध्वनि दृष्टि से अध्ययन पर कार्य छोटा सा प्रयास है।

कुमाउनी शब्दों पर यह शोध कुमाउनी प्रेमियों, साहित्यकारों एवं कुमाउनी के अध्ययनकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण होगा। क्योंकि कुमाउनी शब्दों के हर क्षेत्र में व्याप्त कुमाउनी भाषा को एक परिष्कृत रूप प्रदान करने पर ही इसकी समस्त भाषाई शक्तियाँ उजागर हो पाएंगी।

विषय विस्तार

ध्वनि अर्थात् आवाज जो भाषा का भौतिक एवं मूर्त पक्ष है। मानव जीवन में ध्वनि के बिना विकास संभव नहीं है क्योंकि ध्वनि से भाषा का निर्माण होता है। भाषा से मानव अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए ध्वनि संकेतों का प्रयोग करता है। भाषा में वाक्यों का प्रयोग होता है, वाक्य में पदों या शब्दों का और शब्दों में वर्णों का प्रयोग होता है, वर्ण ध्वनि से प्राप्त होते हैं अर्थात भाषा की सबसे छोटी ईकाई ध्वनि कहलाती है। किसी भी भाषा में ध्वनि का महत्वपूर्ण स्थान होता है क्योंकि ध्वनि ही भाषा को अपने वर्णों के द्वारा समृद्ध करती है।

आज हम जिसे कुमाउनी भाषा कहते हैं वह सैकड़ों वर्षों का परिणाम है। कुमाउनी भाषा का तात्पर्य कुमाऊँ वासियों का विचार–विनिमय का साधन। कुमाउनी उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल की अत्यन्त प्राचीन भाषा है, डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, डॉ0 के0डी0 रूवाली, डॉ0 शेरसिंह बिष्ट तथा अन्य भाषा विद्वानों ने कुमाउनी भाषा का उद्भव शौरसैनी अपभ्रंश से माना है। कुमाउनी भाषा का शब्द भण्डार अत्यन्त समृद्व है। उसमें भारतीय आर्यभाषाओं तथा आर्येत्तर भाषा के अनेक शब्द प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं जैसे– हिन्दी, मराठी, गुजराती, ब्रज, अवधि, पंजाबी शब्दों की वृद्धि कुमाउनी शब्द संपदा में हुई है। कुमाउनी भाषा में अनेक ध्वनियाँ जो हिन्दी के सदृश हैं परन्तु हिन्दी की अपेक्षा ये ध्वनियां लिखने में कठिन प्रतीत होते हैं।

कुमाउनी की लिपि देवनागरी है जिससे कुमाउनी को लिपिबद्ध करने में सहायक सिद्ध होता है। भाषाई दृष्टि से उत्तराखण्ड राज्य में बोली जाने वाली कुमाउनी भाषा की गणना हिन्दी प्रदेश के अंतर्गत होती है अर्थात् शिक्षा, संचार तथा राजभाषा के रूप यहाँ हिन्दी का व्यवहार होता है। भौगोलिक एवं जातीय स्थितियों के कारण कुमाउनी भाषा के अनेक रूपांतर प्राप्त होते हैं। तात्पर्य कुमाऊँ क्षेत्र की भाषा में प्रचलित बोलियों पश्चिमी कुमाउनी(रौ–चौभैंसी, खसपर्जिया, चौगर्खिया, गंगोली, दनपुरिया, पछाई) और पूर्वी कुमाउनी(कुम्यॉं, सौर्याली, सीराली, अस्कोटी) की बोलियों के शब्दों में ध्वनि भिन्नता देखी जाती है।

मानवीय ध्वनि का आधार वायु है, यह वायु हमें फेफड़ों से प्राप्त होती है फेफड़े ध्वनि उत्पादन में धौंकनी का कार्य करते हैं, जिस प्रकार हारमोनियम आदि वाद्य यंत्रों में धौंकनी के द्वारा वायु को बाहर से अन्दर लेकर उसके उपयोग के द्वारा सरगम ध्वनि निकाली जाती है उसी प्रकार मानव शरीर में ध्वनि के लिए प्रक्रियाऐं काम करती है– श्वास, प्रश्वास।

विभिन्न वैयाकरणकारों और लेखकों ने ध्वनि के विषय में निम्न परिभाषाऐं दी हैं–

''ध्वनि का समान्य अर्थ 'शब्द' अथवा 'आवाज' है, इसे शब्द आवाज, नाद, रव आदि पर्यायों में व्यक्त किया जाता है संसार में यह संयोग और वियोग दो कारणों से उत्पन्न होकर कर्णेद्रिय द्वारा ग्रहण किया जाता है, निर्जीव पदार्थों के घर्षण से उत्पन्न ध्वनि भी होती है जो बिजली की कड़क बादलों की आवाज, पेड़ पत्तियों की चरमराहट आदि ध्वनि है। अस्तु ध्वनि के विभिन्न रूप ध्वनि के सामान्य अर्थ को दर्शाती है''।[1]

''भाषा ध्वनि प्रयुक्त ध्वनि की वह लघुतम इकाई है जिसका उच्चारण और श्रोतव्य की दृष्टि से स्वतंत्र व्यक्तित्व हो''।[2]

''ध्वनि शब्द 'ध्वन शब्दे' धातु से 'इ' प्रत्यय लगने से निष्पन्न हुआ है''[3] ध्वनि को स्वन भी कहा जाता है। ध्वनि के बिना भाषा की कल्पना ही नहीं की जा सकती बल्कि कहा जा सकता है कि ध्वनि भाषा की आधारशिला है वस्तुतः हम अपनी वाक्इन्द्रियों द्वारा जो भी कुछ बोलते हैं या उच्चारण करते हैं वह ध्वनि है।

धीरेन्द्र वर्मा अपनी पुस्तक हिन्दी भाषा का इतिहास में लिखते हैं– ''आधुनिक शास्त्रीय परिभाषा के अनुसार स्वर वह ध्वनियाँ कहलाती हैं जिनके उच्चारण में मुखद्वार कम–ज्यादा तो किया जाता है किंतु न तो कभी बिल्कुल बंद किया जाता है और न इतना अधिक बंद कि निःश्वास रगड़ खाकर निकले। ऐसा न होने से ध्वनि व्यंजन कहलाती है''।[4]

''संस्कृत में ध्वनि विज्ञान का पुराना नाम 'शिक्षाशास्त्र' था हिन्दी में इस प्रसंग में 'फोनेटिक्स' के लिए मुख्यतः ध्वनिविज्ञान ध्वनिशास्त्र तथा श्वन विज्ञान आदि का प्रयोग किया जाता है''।[5] उच्चारण तथा श्रवण की दृष्टि से स्वतंत्र व्यक्तित्व रखने वाली भाषा में प्रयुक्त ध्वनि की सबसे छोटी ईकाई का नाम ही ध्वनि कहलाता है, अर्थात् वैज्ञानिक दृष्टि से वायु–कणों के दबाव तथा विदलन से वायुमण्डलीय दबाव में आने वाले परिवर्तन या उतार चढ़ाव का नाम ध्वनि है। जोकि भाषा–विज्ञान में ध्वनि का यह व्यापक रूप ग्राह्य नहीं है। ध्वनि को वाक्स्वन नाम से भी अभिहित किया जाता है।

''डॉ0 केशवदत्त रूवाली ध्वनि के विषय में कहते हैं कि जो सामान्यतः कानों द्वारा अनुभूत किसी भी आवाज को ध्वनि या श्वन कहा जा सकता है। जैसे– हवा की सांय–सांय, सूखे पत्तों की खड़खड़, चिड़ियों की चहचहाट, नवजात शिशु की किलकारी, पीड़ाजन्य नरकन आदि। भाषा के क्षेत्र में उसी ध्वनि को अध्ययन का विषय बनाया जाता है जो मान वागइन्द्रियों द्वारा उच्चरित हो''।[6] किसी भी वस्तु की श्रवणीय समग्र स्थितियां सामान्यतः ध्वनि कही जाती है। भाषा के प्रसंग में इसे 'ध्वनि विज्ञान' कहा जाता है। अंग्रेजी में इस 'phonetics' कहते हैं।

इस प्रकार विभिन्न परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि दो या अधिक उच्चारण अवयवों के परस्पर संपर्क में आने से ध्वनि का उत्पादन होता है। अर्थात् ध्वनि शब्दों को सकारात्मक रूप से आवाज व्यक्त करना या भाषा की सबसे छोटी इकाई को कहते हैं। भाषा की सामान्यतः चार इकाईयाँ होती है ध्वनि, पद, वाक्य, अर्थ। वाक्य भाषा की स्वाभाविक इकाई है। ध्वनि कृत्रिम लघुतम इकाई है। पद वाक्य में प्रयुक्त होता है। इसी प्रवृत्ति के अनुसार हिंदी की भांति कुमाउनी में ध्वनियाँ समान हैं।

''डॉ0 त्रिलोचन पाण्डे कुमाउनी में प्रयुक्त ध्वनि(वर्ण) के विषय में लिखते हैं कि कुमाउनी में 14 स्वर हैं और 37 व्यंजन हैं। स्वरों में 8 दीर्घ और 6 ह्रस्व हैं''।[7] अर्थात् वर्णों को ही ध्वनि कहा गया है। कुमाउनी शब्दावली के संदर्भ में कहा सकता है कि शब्दों के स्वरूप ज्ञान के लिए ध्वनि ज्ञान अत्यावश्यक है। कुमाउनी शब्द को समझने के लिए हमें ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं ध्वनि परिवर्तन की दिशाऐं का अध्ययन आवश्यक है जो निम्न रूप से प्रस्तुत है–

ध्वनि परिवर्तन के कारण

''परिवर्तन सृष्टि का नियम है संसार की प्रत्येक वस्तु में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है, हो रहा है और होता रहेगा। प्रत्येक भाषाओं की ध्वनि में परिवर्तन होता है इसी परिवर्तन के कारण एक शब्द के अनेक परिवर्तित रूप दिखाई देते हैं। जैसे– मनुष्य, मानुष, मानस, मनख आदि''।[8] भाषा का यह विकास अथवा परिवर्तन ध्वनि के स्तर पर होता है, संसार के अन्यान्य समस्त तत्वों, पदार्थों के समान भाषा भी परिवर्तनशील है उसमें यह परिवर्तन स्वरों, वाक्यरूपों, अर्थ व ध्वनि पर होता है परन्तु इन सबमें ध्वनि परिवर्तन का योग अधिक रहता है। इस ध्वनि परिवर्तन का एक ओर समाज की राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि वाह्य अवस्थाऐं प्रभावित करती है वहीं दूसरी ओर प्रयोग की अधिकता मुख–सुख, अज्ञानता, शीघ्रभाषण, स्वराघात आदि आन्तिरक अवस्थाऐं के कारण ध्वनि परिवर्तन होता है। उदाहरण के लिए कुमाउनी शब्द आंख को लेते हैं यह संस्कृत शब्द अक्षि से व्युत्पन्न हुआ है इसका ध्वनि परिवर्तन इस क्रम में हुआ है– अक्षि> अक्खि> आँख> आंख् आदि। कुछ कुमाउनी शब्द जो ध्वनि परिवर्तन के कारण उत्पन्न हुए हैं दृष्ट्व्य हैं–

कुमाउनी शब्द	**हिन्दी**
त्यार	त्यौहार
नरैण	नारायण(देवता)
अखोड़	अखरोट
घीण	घृणा
यत्थ	यत्र(यहाँ)
सुखण	सूखना

ध्वनि परिवर्तन की दिशाऐं

प्रत्येक सजीव भाषा में सतत् परिवर्तन होता रहता है। जीवित भाषा का तो लक्षण ही यह है कि उसमें गतिशीलता होनी चाहिए। जो भाषा गतिहीन हो जाती है, जिसका विकास रूक जाता है और जो युगानुकूल परिवर्तन को नहीं अपनाती, वह मृत कहलाती है। उस मृत भाषा का साहित्यिक एवं ऐतिहासिक महत्व भले ही हो किंतु वह जनसाधारण की भाषा कभी नहीं रहती और उसमें सभी प्रकार के विचारों एवं भावों को व्यक्त करने की क्षमता भी नहीं होती। अतः विकास एवं परिवर्तन एक जीवित भाषा का उत्कृष्ट गुण है, परन्तु भाषा में यह विकास या परिवर्तन सदैव ध्वनि विकास या परिवर्तन के द्वारा हुआ करता है। डॉ0 के0डी0 रूवाली ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं के बारे में लिखते हैं कि– ''ध्वनि परिवर्तन की दिशाओं से तात्पर्य है परिवर्तन के कारणों के परिणाम''।[9] कुमाउनी शब्दों में ध्वनि परिर्तन हिन्दी की भांति प्रमुख दिशाऐं निम्न हैं–

आगम

जब कोई ध्वनि किसी शब्द के उच्चारण की सुविधा के लिए शब्द के प्रारंभ, मध्य या अन्त में आकर अपना स्थाई स्थान बना लेती है अर्थात् ''शब्द के आदि, मध्य और अन्त में नई ध्वनि का समावेश आगम कहलाता है। यह ध्वनि स्वर भी हो सकती है और व्यंजन भी''।[10] कुमाउनी शब्दों में आगम की प्रवृत्ति मिलती है। जैसे– कुमाउनी शब्द में स्वर आगम मुख्यतः अ, इ, उ ध्वनियों का होता है। यह तीन प्रकार का होता है– 1. आदि स्वरागम, 2. मध्यस्वरागम 3. अंत्यस्वरागम। यह निम्न प्रकार है–

स्वरागम

आदिस्वरागम	मध्यस्वरागम	अंत्यस्वरागम
इस्कूल–स्कूल	सुमरण–स्मरण	श्राद्ध– सराद
औसर– अवसर	प्राण– पराण	उठण– उठना
ज्यठ् – जेठ(बड़ा)	कर्म– करम	कपाल – कपाई(माथा)
अक्षर– आंखर	सुन – सुवर्ण	कुनव – कुनई(कुण्डली)
अघिल– आघिल (आगे)	काथ– कन्थ	कल्यां – कल्यो(नाश्ता)
घूर्णन– घुमण(घूमना)	सर्प – स्याप	पत्र – पतई(पत्र)

व्यंजनागम

जब शब्द के आदि, मध्य और अन्त के संबंध में व्यंजनागम तीन प्रकार का होता है। कुमाउनी शब्दों में व्यंजनागम निम्न प्रकार है–

आदिव्यंजनागम	मध्यव्यंजनागम	अंत्यव्यंजनागम
एकल – यकल(अकेला)	अजान – अज्ञान (अज्ञान)	खन्यर – खन्यव(खाली जगह)
राख – छार(राख)	आंचरि – आंछरि()	आलकस– आलस्य
जुग – युग(युग/समय)	गोठ – ग्वठ(गोठ)	स्योव – स्यौल(छाया)
अस्थान– स्थान	सराप – शाप(श्राप)	जिभड़ी– जीभ(जिह्वा)

लोप

यह तो सर्वविदित ही है कि व्याकरण शास्त्र, शब्द के स्वरूप की सिद्धि के लिए बनाई गई काल्पनिक प्रक्रिया है। व्याकरण में 'लोप' का प्रयोग अभीष्ट रूप सिद्धि में अनिष्ट ध्वनियों का निवारण मात्र है। अर्थात् मुख–सुख या जल्दी जल्दी बोलने के कारण कभी–कभी कुछ ध्वनियों का लुप्त हो जाना 'लोप' कहलाता है। ''कभी–कभी मुख सुख, प्रयत्नलाघव या उच्चारण में शीघ्रता, स्वराघात आदि के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है''।[11] लोप का सामान्य अर्थ शब्दों में ध्वनियों का विलुप्त हो जाना भी कह सकते हैं। उच्चारण सुविधा के लिए प्रत्येक भाषा की भांति कुमाउनी भाषा में ध्वनियों का लोप मिलता है। लोप तीन प्रकार का होता है–1. स्वर लोप 2. व्यंजन लोप 3. अक्षर लोप। कुमाउनी शब्दों का लोप निम्न द्रष्ट्व्य है–

स्वर लोप

किसी शब्द से स्वर ध्वनियों का लोप हो जाना स्वर लोप कहलाता है। कुमाउनी शब्दों का लोप निम्न द्रष्ट्व्य है–

आदि स्वर लोप	मध्य स्वर लोप	अंत्य स्वर लोप
अनाज– नाज	कन्थ– काथ(कथा)	ताति – तात्(गरम)
भितेर – भतेर(अन्दर)	भरन–भन(भरना)	ब्याह – ब्या(विवाह)
अहंकार– हंकार	मत्ति– मति(बुद्धि)	ईजा – ईज(माता)
	कल्सी–कलश	घीण– घृणा

व्यंजन लोप

स्वर लोप के समान व्यंजन लोप भी तीन प्रकार का होता है जहाँ किसी शब्द के आदि, मध्य और अन्त में व्यंजन ध्वनि का लोप हो जाता है वहाँ व्यंजन लोप होता है।

आदि व्यंजन लोप	मध्य व्यंजन लोप	अंत्य व्यंजन लोप
शमशाण– मसाण(भूत)	ब्राह्मण– बामण(पंडित)	सत्य – सांच(सच)
स्थान– थान	भीजण – भीगण (भीगना)	उज्यव– उज्याल(उजाला)
डसण – दंस(डसना)	च्याड़ – चड़(पक्षी)	नष्ट – नांठ(खत्म)
इग्यार– ग्यारह	च्योल– च्यल(लड़का)	डाइण – डाकिनी(भूतनी)

अक्षर लोप–

पूर्व प्रचलित शब्दों स्वर और व्यंजन ध्वनियों के लुप्त हो जाने को अक्षर लोप कहते हैं। अक्षर लोप भी तीन प्रकार के होते हैं–

आदि अक्षर लोप	मध्य अक्षर लोप	अंत्य अक्षर लोप
आदित्यवार– एतवार	फलाहारी– फलारी(फलयुक्त)	कुनव– कुन(कुण्डली)
झा– उपाध्याय	भण्डार– भनार(भण्डार)	जागरण–जागर(जागृत रहना)

महाप्राणीकरण

जिन ध्वनियों (वर्ण) के उच्चारण में मुख से अधिक हवा निकले महाप्राण कहलाती है अर्थात् कभी–कभी अल्पप्राण ध्वनियां महाप्राण हो जाती है। उच्चारण प्रसंग में कभी–कभी अल्पप्राण ध्वनियाँ महाप्राण हो जाती है। कुमाउनी भाषा में अल्पप्राण ध्वनियों के महाप्राण का उच्चारण करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। कुमाउनी में महाप्राण व्यंजन निम्न प्रकार हैं–
ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, म, द, न्ह, म, म्ह, रह,ल्ह

लिख	लिखण
दृष्टि	दीठ
दिक प्राणी	दीखप्राणी(दुखी आत्मा)
दूद	दूध

अल्पप्राणीकरण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में महाप्राण ध्वनियां अल्पप्राण हो जाती है अर्थात् जिन व्यंजनों के उच्चारण में श्वास शक्ति का कम प्रयोग करना पड़ता है अल्पप्राण कहते हैं। कुमाउनी में अल्पप्राण व्यंजन निम्न हैं–
क, ग, ङ, च, ज, ञ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, र, ल, य, र, श, स। कुमाउनी शब्दों में अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति मिलती है जैसे–क्षार का छार, क्षण का छण आदि इसमें छ ध्वनि क्ष से भी अपना स्वरूप ग्रहण किया हुआ है। कुमाउनी तद्भव कुछ अल्पप्राणीकरण शब्द निम्न हैं–

कुखड़(मुर्गी) **कुकुड़ (ख का क ध्वनि परिवर्तन)**

चंठ(तेज)	चंट (ठ का ट)
झण(आदमी समूह)	जण
जुठ()जुठा	जुट

विषमीकरण

''जहाँ समीपवर्ती दो समान ध्वनियां अपना रूप छोड़कर दूसरा रूप बदल जाता लेती है''।[12] शब्दगत दो समान ध्वनियों में से एक ध्वनि का लोप या परिवर्तन हो जाता है विषमीकरण कहलाता है।

जैसे–

शाक(सब्जी)	**शाग (क का ग हो जाना)**
कंकड़(चूड़ी)	कंगन
काक(कौआ)	काग
कंगाल(पूर्ण कमी होना)	कंकाल
गमन(लूटना/छुपा देना)	गबन
जैदाद(प्रार्पटी)	जैजाद
उपाद(झगड़ा)	उत्पात

वर्ण विपर्यय

कुमाउनी भाषा में ''जब उच्चारण करते–करते किसी शब्द के कुछ अक्षर एक स्थान से दूसरे स्थान पर बोले जाने लगते हैं वहाँ वर्ण विपर्यम होता है''।[13]

अर्थात् जब किसी शब्द में आने वाले स्वर या व्यंजन का स्थान असावधानी के कारण जानबूझकर बदल जाता है वर्ण विपर्यय कहलाता है। यह तीन प्रकार का होता है। स्वर विपर्यय, व्यंजन विपर्यय, और अक्षर विपर्यय।

स्वर विपर्यय	**व्यंजन विपर्यय**	**अक्षर विपर्यय**
अंगुली– उँगुली	नाण– स्नान	(खाणि–पीणि)–(पीणि–खाणि)
दाश– दशा	गृह – घर	कोलतार– तारकोल
बाब–बबा	नाण–स्नान	दालभात–भातदाल
अल्मोड़–अल्माड़	मतलब–मतबल	ऊणजाण– जाणऊण(आना–जाना)
	गीद	गीत
	जतन	यतन(सुरक्षा)

घोषीकरण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वतंत्र तंत्रियों के बीच हवा के घर्षण से कंपन्न उत्पन्न होता है। 'घोष ध्वनियां कहते हैं। ''इसमें अघोष ध्वनि सघोष ध्वनि में परिवर्तित हो जाती है''।[14] कुमाउनी भाषा में घोष ध्वनियां निम्न प्रकार हैं– ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ड़, ढ़ ण, द, ध, न न्ह, ब, भ, म, म्ह, य, र, र्‌ह, ल, ल्ह, व, ह। कभी–कभी मुख–सुख के लिए अघोष ध्वनियों को घोष कर दिया जाता है अर्थात् अघोष ध्वनि का संघोष ध्वनि में बदल जान या परिवर्तन हो जाना घोषीकरण कहलाता है।

यथा–

अकास –	अगास(आकाश)
ओट	ओड़(घुमावदार)
कंकण	कंगन(कंगन)
शाग	साक(सब्जी)
इग्यार	एकादश(ग्यारह)
घिघारू	घिगारू (एक लकड़ी विशेष)
पस्तर	पाथर(पत्थर)

अघोषीकरण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में स्वतंत्रतंत्रियों के बीच हवा के घर्षण से कंपन्न उत्पन्न नहीं होता अघोष कहलाता है। कुमाउनी भाषा में अघोष ध्वनियां निम्नलिखित है–

क ख च छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, स। अघोषीकरण के विपरित इसमें संघोष ध्वनि अघोष में परिवर्तित हो जाती है या जब कोई संघोष ध्वनि कालान्तर में अघोष में बदल जाती है 'अघोषीकरण' कहलाता है।

मदत	मदत
किताब	किताप

ध्वनि परिवर्तन के अनेक चक्रों पर कुमाउनी भाषा की शब्दावली घिसती चली गई हैं। कहीं–कहीं परिवर्तन में खुदरापन आ गया है। कुमाउनी शब्दों का जो रूप ध्वनि के आधार पर हमारे सामने आया है यदि हम इनको स्रोतों के सामने रख कर देखें तो हमें अर्थ के परितर्वन के अलावा ध्वनि परिवर्तन विशेषता से दिखाई पड़ेगा। वर्तमान समय में नगरीय कुमाउनी में हिन्दी के शब्दों की ध्वनियों का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है, किन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में कुमाउनी का शुद्ध रूप आज भी सुरक्षित है। वास्तव में कुमाउनी भाषा में वैदिक संस्कृत के अनेक शब्द शुद्ध रूप से आज भी ध्वनि के कारण सुरक्षित देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार प्रस्तुत शोध आलेख के अध्ययन का निष्कर्ष के रूप में स्पष्ट है कि कुमाउनी में प्रयुक्त शब्दावली में आगम के कारण, लोप के कारण, महाप्राणीकरण के कारण अल्पप्राणीकरण के कारण, वर्ण विपर्यय, घोष, अघोष आदि के कारण ध्वनि की दृष्टि से शब्दों को उजागर करता है, तथा कुमाउनी शब्दों में ध्वनि परिवर्तन की दृष्टि से अर्थ रूप भी परिवर्तित होते हैं। कुमाउनी भाषा को एक परिष्कृत रूप प्रदान करने में भाषा के ध्वनि पहलू को यह शोध उजागर करता है, जिससे कुमाउनी भाषा को भी समृद्ध और परिष्कृत बनाया जा सके।

अंत टिप्पणी

1. *ध्वनि सिद्वान्त, डॉ0 शेरसिंह बिष्ट, नेशनल पब्लिक हाउस, दरियागंज, दिल्ली; पृ0 07।*

2. भाषा विज्ञान तथा हिन्दी भाषा का विकास, डॉ0 लक्ष्मीकांत पाण्डे, पृ0 97।
3. ध्वनि सिद्वान्त, डॉ0 शेरसिंह बिष्ट, नेशनल पब्लिक हाउस, दरियागंज, दिल्ली; पृ0 07।
4. हिन्दी भाषा का इतिहास, धीरेन्द्र वर्मा, प्रकाशक हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग; पृ0 91।
5. भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्राइवेट लिमिटे, इलाहाबाद; पृ0 04।
6. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि, डॉ0 के0डी0 रूवाली, ग्रनथायन सर्वोदय नगर अलीगड़, पृ0170।
7. कुमाउनी भाषा और उसका साहित्य, डॉ0 त्रिलोचन पाण्डे, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ, पृ0 42।
8. भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र, कपिलदेव द्विवेद्वी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; पृ0 227।
9. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि, डॉ0 के0डी0 रूवाली, ग्रनथायन सर्वोदय नगर अलीगड़, पृ0190।
10. वही, पृ0 190।
11. भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र, कपिलदेव द्विवेद्वी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; पृ0 235।
12. सामान्य भाषा विज्ञान, डॉ0 द्वारका प्रसाद सक्सेना; पृ006।
13. भाषा विज्ञान तथा हिन्दी भाषा का विकास, डॉ0 लक्ष्मीकांत पाण्डे, पृ0 113–114।
14. हिन्दी भाषा संरचना एवं प्रयोग, डॉ0 के0डी0 रूवाली, अल्मोड़ा बुक डिपो अल्मोड़ा; पृ0 99।